Class - B.A - I (Honours)

Date - 13.04.2020
Monday

Name of the Guest Teacher - Khushbu Kumari,
(V.S.J. College, Rajnagar)

Topic - न्याय (Justice)

(न्याय की धारणा का विकास, अर्थ एवं परिभाषा)

परिचय :-

न्याय राजनीति विज्ञान की एक ऐसी धारणा है, जिस पर मानव - सभ्यता के प्रारंभिक काल से ही विचार होता आ रहा है। न्याय की धारणा उतनी ही पुरानी है, जितनी कि हमारा समाज। वस्तुत: न्याय के अभाव में मानव - समाज के अस्तित्व की कल्पना नहीं की जा सकती है। आधुनिक राष्ट्र - राज्य की आधारशिला ही न्याय पर आधारित है।

न्याय शब्द यूनानी भाषा के 'डिकेयोसीन' शब्द का रूपान्तर है।

Scanned with CamScanner

न्याय की धारणा का विकास

प्राचीन समय से लेकर आज - तक न्याय पर विचार - विमर्श होता आ रहा है। हालांकि समय के अनुसार न्याय की धारणा में भी परिवर्तन आता गया। कई धार्मिक ग्रंथों में ईश्वर के आदेशों के अनुसार व्यवहार करना ही न्याय कहलाता है। उदाहरण के लिए बाइबिल के अनुसार न्याय या सदाचार निश्चित नियमों के बिना विचारों में स्पष्ट बन सकता है। वह निष्पक्षता, समानता आदि को न्याय का आवश्यक तत्व मानता है। न्याय की धारणा के विकास को हम दो भागों में विभाजित कर सकते हैं— पूर्वी तथा पश्चिमी दर्शन।

पूर्वी दर्शन में हम भारतीय राजनीतिक चिन्तन में न्याय की धारणा पर विचार करेंगे। प्राचीन काल में भारतीय चिन्तकों ने न्याय को महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया है। मनु के धर्म के अन्तर्गत मनुष्य की सामाजिक दायित्व के प्रति न्याय का वर्णन किया गया।

Scanned with CamScanner

उनके अनुसार प्रत्येक व्यक्ति का अलग-अलग धर्म है, जिसका पालन करना ही न्याय है। प्राचीन भारतीय चिन्तन की एक विशेषता यह थी कि प्राचीन काल में ही न्याय की कानूनी धारणा को स्वीकार कर लिया गया था। जिसे पाश्चिमी राजनीतिक चिन्तन ने आधुनिक समय में स्वीकार किया है। प्राचीन भारत में वर्ण-व्यवस्था का आधार सामाजिक न्याय का सिद्धांत था। इस व्यवस्था के अनुसार ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र के कार्य प्रकृति द्वारा निश्चित है और अपने-अपने निर्धारित कार्यों को करना ही न्याय है।

पाश्चात्य राजनीतिक चिन्तन में न्याय की धारणा का अध्ययन हम प्लेटो से करेंगे। प्लेटो की पुस्तक 'Republic' के अध्ययन से पता चलता है कि प्राचीन यूनान में न्याय के संबंध में विभिन्न धारणाएँ प्रचलित थी- परम्परावादी, उग्रवादी तथा अनुभववादी। परम्परावादी धारणा के प्रतिपादक सिफलस तथा पौलिमार्कस थे। उनके अनुसार अपना ऋण अदा करना तथा शत्रुओं के साथ शत्रुवत और मित्रों

Scanned with CamScanner

से मित्रवत् व्यवहार करना ही न्याय है। उग्रवादी धारणा के प्रतिपादक थ्रेसीमाकस थे। उन के अनुसार शक्तिशाली का हित ही न्याय है। अनुभववादी सिद्धांत का प्रतिपादन ग्लूकॉन ने किया था। उनके अनुसार न्याय दुर्बलों का हित है और यह वह साधन है जिसके द्वारा बलवान के अत्याचार से दुर्बलों की रक्षा होती है।

इन धारणाओं की प्लेटो ने कड़ी आलोचना की है तथा न्याय संबंधी अपने विचार देते हुए उन्होंने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति द्वारा अपने-अपने क्षेत्र में कार्य करना तथा एक-दूसरे के कार्य में हस्तक्षेप नहीं करना ही न्याय है। वस्तुतः प्लेटो का न्याय-दर्शन नैतिकता पर आधारित था।

प्लेटो के बाद अरस्तू ने भी न्याय संबंधी अपने विचार प्रस्तुत किये हैं। समकालीन चिन्तकों में जॉन रॉल्स ने अपनी पुस्तक 'A Theory of Justice' में अपना न्याय का सिद्धान्त प्रस्तुत किया है। रॉल्स ने वितरणात्मक न्याय की धारणा को प्रस्तुत किया है।

Scanned with CamScanner

उसने अपने न्याय सिद्धांत में सबसे पहले उपयोगितावादी विचारों का खण्डन किया है और अपने न्याय सिद्धान्त को प्रकार्यात्मक आधार प्रदान किया है। उसने सामाजिक सहयोग में न्याय की भूमिका को स्पष्ट किया है।

आधुनिक समय में न्याय की धारणा ज्यादा विस्तृत हो गई है तथा यह कानून पर आधारित हो गई है। आज प्रत्येक राज्य के शासन - व्यवस्था में न्याय सबसे प्रमुख स्थान रखता है। प्रत्येक राज्य का लक्ष्य अपने नागरिकों को न्याय प्रदान करना हो गया है। इसके लिए संविधान के द्वारा ही नागरिकों को सभी प्रकार के शोषण एवं अन्यायों से रक्षा करने के लिए उपाय किये गये हैं। आज प्रत्येक राज्य का उद्देश्य अपनी जनता को सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक न्याय प्रदान करना है।

वर्तमान समय में अधिकांश राज्यों ने लोकतांत्रिक शासन प्रणाली को अपनाया है और लोकतंत्र का आधार ही शोषण एवं अन्याय से मुक्ति होता है।

Scanned with CamScanner

न्याय का अर्थ एवं परिभाषा

न्याय की परिभाषा अलग-अलग विद्वानों द्वारा अपने तरीके से प्रस्तुत की गई है। इनमें से कुछ प्रमुख परिभाषाएं निम्नलिखित हैं—

प्लेटो के अनुसार, "अपने निश्चित कर्तव्यों को करना तथा दूसरों के कर्तव्यों में हस्तक्षेप नहीं करना ही न्याय है।"

थ्रेसीमाकस के अनुसार, "शक्तिशाली का हित ही न्याय है।"

न्याय के अर्थ को समझने के लिए सर्वप्रथम न्याय के तत्वों को समझना आवश्यक है। न्याय के कुछ महत्वपूर्ण तत्व इस प्रकार हैं—

(1) सत्य — सत्य न्याय का एक महत्वपूर्ण तत्व है। वस्तुनिष्ठ रूप में न्याय की मांग है कि तथ्य और सम्बन्ध विषयक अपने सभी कथनों में हम सत्य का प्रयोग करें। व्यक्तिनिष्ठ रूप में इसका आशय यह है कि विभिन्न व्यक्तियों और वस्तुओं के संबंध में हम वही विचार

Scanned with CamScanner

प्रकट करें, जिसे हम ठीक समझते हैं। विशेष रूप से न्याय के प्रशासन में तथ्यों की सत्यता का बहुत अधिक महत्व है।

(2) कानून के समक्ष समानता — न्याय का लक्ष्य तभी प्राप्त किया जा सकता है जब कानून के सामने सभी समान होने चाहिए और उनके प्रति समानता का व्यवहार किया जाना चाहिए।

(3) स्वतंत्रता — स्वतंत्रता के बिना न्याय को प्राप्त नहीं किया जा सकता है। परन्तु इसके साथ ही स्वतंत्रता पर उचित बंधन भी होनी चाहिए।

न्याय के इन तत्वों के आधार पर हम कह सकते हैं कि शोषण, अन्याय, कुरीतियां, अत्याचार आदि से कानूनी आधार पर रक्षा ही न्याय है। आधुनिक समय में कानून के अभाव में न्याय को स्थापित नहीं किया जा सकता है। वस्तुतः न्याय समाज में समानता स्थापित करना, स्वतंत्रता प्रदान करना, उचित अवसर उपलब्ध कराना तथा मतैक्य

Scanned with CamScanner

न्याय की स्थिति है समाज को मुक्ति दिलाना है।

Scanned with CamScanner